संत कंवर राम जी के वार्षिकोत्सव पर माननीय अध्यक्ष का सम्बोधन

महान कर्मयोगी और संत श्री कंवर राम जी के वार्षिकोत्सव पर संत महाराज को नमन करता हूँ, उनका स्मरण करता हूँ।आज आयोजित इस कार्यक्रम में सभी लोगों का अभिवादन।

संत कंवर राम जी आजीवन विश्व कल्याण और मानवता के लिए समर्पित रहे। देश की आजादी से भी पहले उन्होंने देश में सामाजिक – धार्मिक चेतना को मजबूत करने का काम किया। संत कंवर राम जी का जीवन सिंधी समाज के साथ साथ सभी समाजों के लिए आदर्श है, साक्षात प्रेरणा है। आर्थिक रूप से कमजोर परिवार में जन्म लेकर उन्होंने जो पहचान बनाई, जिस तरह समाज का मार्गदर्शन किया, भक्ति की महान परंपरा स्थापित की; ऐसा उनका जीवन हम सभी को नई दिशा देता है।

संत कँवर राम जी ने लोगों को सद्भाव, शांति और नैतिक गुणों की सीख दी। भगवान श्री झूलेलाल जी के आशीर्वाद और संत कंवर राम जी की शिक्षाओं पर चलकर सिंधी-पुरुषार्थी समाज कई वर्षों से मानव सेवाका महान दायित्व निभा रहा है। मानव के कल्याण के लिए आपका समर्पण, समाज के हर दु:ख को अपना दु:ख, समाज की पीड़ा को अपनी पीड़ा समझ कर काम करना यह सिंधी समाज के जीवन का सार है।

वर्ष 1947 में देश आजादी के समय हजारों लोगों को उस समय के अत्याचार के कारण अपनी भूमि को छोड़ना पड़ा।अपनी सम्पदा-सम्पत्ति को छोड़ना पड़ा, लेकिन अपने संस्कार और संस्कृति को नहीं छोड़ा। इस विशेषता ने ही सिंधी समाज को आगे बढ़ाया है।

मैं जब देश से बाहर जाता हूँ, तो कई देशों जैसे मैक्सिको , दुबई, सूरीनाम में; मैंने वहाँ सिन्धी समाज के लोगों से पूछा कि क्या कभी आपका हिन्दुस्तान आना-जाना रहता है! तो उन्होंने कहा कि हम हिन्दुस्तान से जुड़े रहते हैं और हम घर में अभी भी सिन्धी भाषा बोलते हैं। ये संस्कार सिंधी समाज के हैं। समाज को अपनी मातृभूमि - अपनी मातृभाषा पर बहुत गर्व है।

सिंधी समाज का व्यक्ति देश और दुनिया में कहीं भी रहता हो, अपने सामर्थ्य से – अपने साहस से हर जगह प्रेरणा देता है। छोटे-छोटे काम, कारोबार, व्यापार, सेवा से लेकर अर्थव्यवस्था के प्रमुख सेक्टर्स में सिंधी समाज के लोगों की महत्वपूर्ण भूमिका है। एक्सपोर्ट-इम्पोर्ट का काम हो, सेल्फ हेल्प ग्रुप बनाकर काम करना हो या MSME का सेक्टर हो, ये सब काम सिंधी समाज कई वर्षों से कर रहा है।

कोटा के अंदर घर में चाहे थैली बनाने का काम हो, चाहे मूंगड़ी बनाने का काम हो, चाहे पापड़ बनाने का काम हो, वहां की महिलाएं और बच्चे काम करते हैं। अपने पुरुषार्थ से समाज ने आमजन को सस्ती दर पर माल उपलब्ध कराने का बड़ा प्रयास किया। मुझे जब विश्व के कई देशों में जाना हुआ, तो मुझे लगा कि केवल भारत में ही नहीं, मेरे क्षेत्र में ही नहीं, बल्कि विश्व के उन देशों के अंदर भी उनका पुरुषार्थ है।

आप चाहे दुनिया के किसी भी देश में चले जाएं, जहां भी सिंधी समाज का व्यक्ति मिलेगा, वह अपनी कड़ी मेहनत, और पुरुषार्थ से प्रगति की ओर बढ़ता दिखेगा। धन तो सभी कमाते हैं, लेकिन धन

कमाकर उसे मानवता के लिए, समाज के लिए समर्पित करने के जो संस्कार सिंधी समाज में है; उसकी जितनी सराहना की जाए, कम है।

मैं कोटा में भी देखता हूं कि चाहे अन्न भंडार हो, चाहे प्याऊ हो, चाहे अस्पताल हो, चाहे शिक्षा का मंदिर हो, एक पुरुषार्थी समाज, एक कठिन परिश्रम करने वाले समाज ने इन सभी क्षेत्रों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

देश के सामाजिक - सांस्कृतिक क्षेत्र के साथ ही, आर्थिक क्षेत्रको भी व्यापक तौर पर मजबूत बनाने का काम सिंधी समाज के लोगों ने किया है। उपभोक्ता को सस्ता, टिकाऊ माल मिले; इसके लिए सिंधी समाज का काम काबिल-ए-तारीफ है।

वरूण देवता भगवान झूलेलाल ने ऐसी कृपा दी है कि सिन्धी समाज का व्यक्ति, जहाँ भी जिस काम को करता है, बहुत अच्छी तरह व्यापार के साथ सरोकार करने की दिशा में काम कर पाता है।

आज हमारे इंडस्ट्रीज सेक्टर के अंदर इंडस्ट्रीज में कम लागत, और ज्यादा उत्पादन की दिशा देने का काम किया है, तो वह सिन्धी समाज ने किया है। इसी के साथ हम देखते हैं कि सेवा में अन्न भंडारा , प्याऊ ,ठहरने के लिए आश्रम ,अस्पताल जैसे कितने ही काम सिन्धी समाज ने किए हैं।

देश भर में प्रेम प्रकाश आश्रम, जहां हजारों लोग ठहरते हैं। जहां 24 घंटे लोगों को भोजन और प्रसाद मिलता है। ऐसा समाज का प्रकल्प है। संत कंवर राम जी का जीवन भी यही संदेश देता है कि जितना कर सकते हैं, हम समाज के लिए समर्पण भाव से कार्य करें। पुरुषार्थ से जो भी धन अर्जित करें, उस धन को समाज के लिए लगाएं। ताकि दुनिया में खुशहाली आए। सेवा, समर्पण और अध्यात्म इस समाज के संस्कार और संस्कृति में हैं और इसीलिए इस समाज को पुरुषार्थ समाज कहा जाता है।

सूरीनाम में मैंने देखा कि जहां मैं रुका हुआ था, वहां पर एक बड़ा कृपलानी मॉल था। मुझसे रहा नहीं गया, तो मैंने मेरे एम्बेसेडर से पूछा कि क्या यहां पर भी सिंधी समाज के लोग रहते हैं? तो उन्होंने कहा कि सूरीनाम में यहां का सबसे बड़ा व्यक्ति ही कृपलानी है। मैंने उनसे कहा कि उन्हें बुलाइए। उन्होंने कहा कि वह शाम को डिनर पर आ रहे हैं।

मैं मेक्सिको, अमेरिका, दुबई आदि देशों में गया हूं, तो मैंने यह पाया है कि दूरदराज के छोटे-छोटे देशों में भी सिंधी समाज के लोग बहुत पुरुषार्थ और कड़ी मेहनत करते हैं। मेक्सिको के जिस होटल में हम खाना खा रहे थे, उसके मालिक इंदौर के रहने वाले थे। वे सिंगापुर से मेक्सिको सूट का नाप लेने और सिलने जाया करते थे। धीरे-धीरे मेक्सिको में उन्होंने अपने काम का विस्तार किया। उन्होंने होटल, रेस्टोरेंट्स खोले और रियल स्टेट का काम शुरू किया। मैंने उनसे पूछा कि आज उनकी क्या स्थिति है, तो उन्होंने कहा कि मैं 100 करोड़ रुपये के बंगले में रहता हूं।

सिंधी समाज हमेशा आक्रमण और संघर्ष से लड़ता रहा है। आजादी के पहले एक लंबे समय तक जहां-जहां भी सिंधी समाज के लोग रहते थे, उन पर समय-समय पर आक्रमण हुआ। देश के विभाजन में भी सिंधी समाज को बड़ी पीड़ा उठानी पड़ी। लेकिन इस समाज ने हर संघर्ष के सामने अपने आप को मजबूत बनाया और सेवा के संस्कारों को जीवंत बनाए रखा।

भौतिक संसाधन कितने भी हो जाएं, भौतिक सुख से व्यक्ति सुखी नहीं हो सकता है। विश्व के ज्यादातर देश भौतिक सुखों की तरफ गए, लेकिन अध्यात्म और शांति तो भारत में ही प्राप्त हुई।

सिंधी समाज की यह मान्यता है कि "हमें मनुष्य जीवन मिला है, और मनुष्य जीवन से सर्वश्रेष्ठ जीवन नहीं हो सकता है।" इस मनुष्य जीवन को हम झूलेलाल जी भगवान की कृपा से, उनके आशीर्वाद से सेवा करते हुए बिताएं।

कठिन परिश्रम करनेवाले सिंधी-पुरुषार्थी समाज पर भक्त कंवर राम जी जैसे महान संतों का आशीर्वाद तथा भगवान झूलेलाल की कृपा सदा बनी रहे।

समाज के अंतिम व्यक्ति के जीवन में बदलाव करने की अपनी जिम्मेदारी को हम अधिक सामर्थ्य से निभा पाएं, इसकी हिम्मत परमात्मा हमें दे।

दीपावली आ रही है। मैं आप सभी को दीपावली की शुभकामनाएं भी देता हूँ। दीपावली का पर्व संकल्प का पर्व है। जिस प्रकार दीपक स्वयं जलकर चारों तरफ उजाला कर देते हैं, उसी तरह हम भी अपने आप को देश और समाज के लिए समर्पित करें।

इसी भावना के साथ संत श्री कंवर राम जी महाराज और भगवान श्री झूलेलाल जी को पुनः कोटि-कोटि प्रणाम।

आप सभी को बहुत-बहुत धन्यवाद।